

THURSDAY

05

095 270 • WK 14

APRIL

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10
11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24
25 26 27 28 29 30 31
S M T W T F S S M T W T F

अगर किसी को ज्वर बनना है
उस उबजना मिलनी या अलगाई होती
और वह हर समय प्रगाथ करता है ज्वर
वृद्ध के लिए वह अधिक समय तक पढ़ा
है या फिर किसी शिक्षण से सहभागता
करती है।

उपलब्धि का सिद्धांत :- इस सिद्धान्त के प्रयोग
मैथिली है इसके अनुसार हर व्यक्ति कुछ
न कुछ उपलब्धि की चाह रखता और
उसे पाने के लिए हर समय प्रयास
करता जिससे प्रेरित होता और अपनी
उपलब्धि प्राप्त करता है।

शरीर का सिद्धान्त :- इस सिद्धान्त के
प्रतिपादक मार्ग है उनका मानना है कि
मनुष्य में अभिप्रेरण किसी काह उद्दीपक
द्वारा उत्पन्न होती है। उसके शरीर के
आंतरिक तंत्रों में होने वाले परिवर्तनों के
कारण उत्पन्न होती है। इसमें अभिप्रेरण
को कोई महत्व नहीं है।
हम उपरोक्त सिद्धान्त में क
पाते हैं कि कोई न कोई अभिप्रेरण का
स्नात होता जा जालक को काह
करता है जिससे व्यक्ति काह करता
है। अभिप्रेरण विद्यार्थी में सीखने की
गति को तेज करता है अभिप्रेरित
प्रिया में अधिगम शिक्षण शीघ्रता
से होती है।

2018

मैरुलो ने इस चित्र में दर्शाया है कि मैं कबल आपसगतता होती है जो इस प्रेरित करती है। इन्होंने पाँच प्रकार आवश्यकताओं को बताया कि है ① प्रथमिक आवश्यकता जिनमें इन्होंने शारीरिक आवश्यकता एवं सुरक्षा की आवश्यकता को रखा जिसे व्यक्ति प्रेरित होकर कार्य करना ② मनोवैज्ञानिक कारण होते हैं जो मानव को प्रेरित करते हैं। ③ आत्मवास्तविकता के द्वारा प्रेरित हैं चानि वे अपनी आत्मबोध द्वारा प्रेरित होकर कार्य करते हैं।

अतः व्यक्ति अपनी शारीरिक, सुरक्षा तथा, सम्मान, एवं प्रेम, आत्मबोध आदि के द्वारा प्रेरित होकर अधिनाम की प्रक्रिया करता है। यामि आवश्यकता उसे कार्य करने की प्रेरणा देता है।

IV उत्तेजना, अनुप्रेरणा सिद्धान्त :- उत्तेजना भी प्रेरणा मिलती है इस सिद्धान्त के प्रयोगा वर्त्मन है वृ उनका मानना यह है कि सबके अन्दर जोश होता और जब व्यक्ति अपनी कोतहल को का शक्ति शान्त करने के लिए आत्मप्रेरित होकर कार्य करता है। आत्म लक्ष्य प्राप्त करता है। उसे सुलभ होती है। यह सिद्धान्त वे हैं जो कोतहल, रवोजुलीन, क्रिया, दस्त, कोशल, क्षमता पर आधारित हैं। व्यक्ति अपनी दुनर मा क्षमता को प्रयोग नहीं करता तब तक उसे जैन नहीं प आता जिससे व्यक्ति बेचैनी रहता है यही बेचैनी को दूर करने के लिए प्रेरित होता और उस कार्य को करने के लिए जिसमें उसे शान्ति मिले। उदाहरण के स्वरूप